IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, January 2024

भारत में सांस्कृतिक समृद्धि को बढ़ावा देने में डिजिटल उपकरणों की भूमिका

डॉ॰ गौरव त्रिपाठी

असिस्टेंट प्रोफेसर -राजनीति विज्ञान

राजकीय पी जी कालेज, मुसाफिरखाना-अमेठी

सारांश

भारतीय संस्कृति, भाषाओं, कलात्मक परंपराओं, अनुष्ठानों, लोकज्ञान और समुदायिक प्रथाओं पर आधारित है, यह डिजिटल युग में एक नए स्वरूप में विकसित हो रही है। स्मार्टफोन, टैबलेट, लैपटॉप और स्मार्ट टीवी जैसे डिजिटल उपकरण आज संस्कृति के संरक्षण, प्रसार, उपभोग और नए रूपों में निर्माण के साधन बन गए हैं। यह शोध-पत्र विश्लेषण करता है कि भारत में डिजिटल उपकरणों ने किस प्रकार सांस्कृतिक सत्यता और नवाचार को प्रोत्साहित किया है। अध्ययन मुख्यतः गुणात्मक पद्धति और वर्णनात्मक विश्लेषण पर आधारित है तथा इसमें अनेक रिपोर्टों, विद्वतापूर्ण शोध और डिजिटल पहलों का अध्ययन शामिल किया गया है। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष बतलाता हैं कि डिजिटल उपकरणों ने भारतीयों की सांस्कृतिक पहुँच का विस्तार किया है, साथ ही साथ परंपरागत ज्ञान को नई पीढ़ी के निकट लाया है, इसने भाषाई विविधता से राष्ट्रीय एकता को मजबूत किया है और समुदायों को अभिव्यक्ति के नए अवसर प्रदान किए हैं। हालांकि डिजिटल विभाजन और एल्गोरिद्मिक पूर्वाग्रह जैसी चुनौतियाँ मौजूद हैं, फिर भी डिजिटल उपकरण भारत में सांस्कृतिक प्रगति के शक्तिशाली माध्यम बन चुके हैं।

मुख्य शब्द

डिजिटल उपकरण, भारत, सांस्कृतिक उन्नति, डिजिटल मीडिया, विरासत संरक्षण, भाषाई विविधता, सोशल मीडिया, डिजिटल संस्कृति, ऐल्गारिदम, सत्यता, समाजीकरण

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, January 2024

प्रस्तावना

भारत का सांस्कृतिक परिदृश्य सदियों से मौखिक कथाओं, शास्त्रीय कलाओं, धार्मिक परंपराओं, लोकज्ञान और सामुदायिक आचरण के माध्यम से जीवंत बना रहा है। लेकिन 21वीं सदी में डिजिटल क्रांति ने संस्कृति के निर्माण, संरक्षण और उपभोग करने के तरीके में आमूल-चूल परिवर्तन किया है। आज स्मार्टफोन और टैबलेट जैसे डिजिटल उपकरणों ने संस्कृति को निजी, सार्वजनिक और वैश्विक—सभी स्तरों पर अधिक सुलभ बना दिया है। भारत युवा शक्ति से भरपूर तकनीकी रूप से एक सक्षम देश है। इंटरनेट की बढ़ती पहुँच और किफ़ायती उपकरणों ने डिजिटल भागीदारी को व्यापक बनाया है। अब संस्कृति केवल भौतिक स्थानों तक सीमित नहीं है; डिजिटल उपकरणों ने इसे ऑनलाइन सीखने, वर्चुअल प्रदर्शन, सोशल मीडिया संवाद और डिजिटल संग्रहालयों में विस्तार दिया है। डिजिटल उपकरणों ने भारतीयों को अपने सांस्कृतिक अतीत से जोड़ने के साथ ही नए रचनात्मक रूपों को भी जन्म दिया है। युवाओं द्वारा बनाए गए संगीत, कला, नृत्य, कहानी-कथन और डिजिटल डिज़ाइन पारंपरिक और आधुनिक संस्कृति के संयोजन का नया रूप बन चुके हैं। इसलिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि डिजिटल उपकरण न सिर्फ तकनीकी साधन हैं, बल्कि समकालीन भारतीय संस्कृति के विकास में निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

1. भारतीय संस्कृति के विकास और प्रसार में डिजिटल उपकरणों की भूमिका का अध्ययन करना।
2. सांस्कृतिक पहुँच और भागीदारी के प्रसार में डिजिटल उपकरणों की भूमिका का अध्ययन करना।
3. भारतीय भाषाओं, कलाओं और परंपराओं को संजोने में डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म और उपकरणों की भूमिका की पहचान करना।
4. डिजिटल संस्कृति से जुड़ी चुनौतियों का परीक्षण करना।
5. भविष्य में डिजिटल तकनीक के प्रभाव से भारतीय संस्कृति के स्वरूप में होने वाले परिवर्तन का अध्ययन करना।

शोधपद्धति

इस शोध मे गुणात्मक एवं विवरण आत्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है। इस शोध को पूर्ण करने के लिए द्वितीयक स्रोतों जैसे भारत सरकार की सूचनाएं, राष्ट्रीय समाचार पत्र, जरनल्स का प्रयोग किया गया है। यह शोध सामाजिक विज्ञान से संबंधित शोध होने के कारण इसमे अवलोकन एवं निरीक्षण करने हेतु

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, January 2024

ज्ञानेन्द्रियों का प्रयोग, प्रत्यक्ष अवलोकन, सूक्ष्म निरीक्षण, कार्य कारण संबंध, एवं अनुभाविक अध्ययन का उपयोग किया गया है।

डिजिटल उपकरण और सांस्कृतिक पहुँच का विस्तार

डिजिटल उपकरणों ने आम नागरिकों की सांस्कृतिक संसाधनों तक पहुँच में उल्लेखनीय वृद्धि की है। ओटीटी ऐप्स और ई-लाइब्रेरियों के माध्यम से लोग शास्त्रीय संगीत, प्राचीन इतिहास, धार्मिक ग्रंथ और लोककला को आसानी से सीख सकते हैं। राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी सहित कई संस्थाओं ने लाखों दस्तावेज़, पांडुलिपियाँ और ऐतिहासिक अभिलेखों को डिजिटल फ़ॉर्म में उपलब्ध कराया है[1]। इससे दूर-दराज़ के क्षेत्रों के छात्रों, शोधकर्ताओं और कलाकारों को गंभीर अध्ययन का अवसर मिलता है।

स्मार्टफोन: सांस्कृतिक लोकतंत्रीकरण का एक माध्यम

स्मार्टफोन ने आम भारतीय को सांस्कृतिक रचनाकार बना दिया है। पहले जहाँ केवल पेशेवर कलाकारों को मंच मिलता था, अब सोशल मीडिया हर व्यक्ति को कला साझा करने का समान अवसर देता है। लोकगायक, हस्तशिल्पकार और ग्रामीण कलाकार अक्सर अपने प्रदर्शन रिकॉर्ड करके इंटरनेट पर साझा करते हैं[2]। इससे उन कला रूपों को भी पहचान मिली है जो लंबे समय से हाशिये पर थे। या कहें तो लुप्तप्राय हो चुके थे। तकनीक एवं उपकरण की पहुँच उच्च माध्यम वर्ग से होते हुए वंचित वर्ग के हातों अभिक्षित क्षेत्रों में पहुंची तो इस सभ्य विश्व को भारत की पुरातन एवं मौलिक संस्कृति से परिचय स्थापित हुआ। इस संस्कृति को उजागर करने वाले लोग न तो बहुत ज्यादा पढे लिखे हैं, न ही तकनीकी को बहुत बारीकी से समझते हैं। किन्तु उनके व्यक्तित्व में संस्कृति का मौलिक रूप परिलक्षितहोता है, जिसके कारण वे सहहज रूप से संस्कृति का डिगितालीकरण कर सभ्य समाज के सम्मुख प्रस्तुत कर रहे हैं, और यह सभ्य समाज अपनी मौलिक एवं पुरातन संस्कृति को प्रोत्साहित करते हुए शेरिंग के माध्यम से जन जन तक पहुँचें का प्रयास कर रहे हैं।

भाषाओं के पुनर्जीवन में डिजिटल उपकरणों की भूमिका

डिजिटल तकनीक ने भारतीय भाषाओं और रीतियों को संरक्षित करने और सिखाने का नया रास्ता खोला है। जैसा की हम सभी जानते हैं भारतीय संविधान के अनुसूची में 22 भाषाओं को आधिकारिक मान्यता प्राप्त है, अन्य भाषाएं इस अनुसूची में स्थान पाने के लिए जददों जहद करते हुए दिखलाई पड़ती हैं। सोशल मीडिया ने उन भाषाओं को भी प्रतिष्ठा और सम्मान प्रदान कर दिया है जो सम्मान और प्रतिस्था आज समाज में

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, January 2024

संवैधानिक भाषाओं को प्राप्त है। भाषा सीखने वाले ऐप्स और ऑनलाइन चैनलों ने संस्कृत और तमिल जैसी प्राचीन भाषाओं से लेकर कई जनजातीय भाषाओं को नई पीढ़ी तक पहुँचाया है[3]। डिजिटल कीबोर्ड और भाषाई टूल भाषा उपयोग को बढ़ावा देते हैं। परिणामस्वरूप, भाषाई विविधता अब पहले की तुलना में अधिक सुरक्षित है।

डिजिटल शिक्षा और सांस्कृतिक अधिगम

डिजिटल उपकरणों ने भारतीय संस्कृति के अध्ययन के नए अवसर पैदा किए हैं। स्वयं (SWAYAM), मूक ई पी जी पाठशाला आइगॉट और दीक्षा (DIKSHA) जैसे प्लेटफ़ॉर्म भारतीय इतिहास, दर्शन, नृत्य, संगीत और साहित्य से संबंधित पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं[4]। छात्र वीडियो लेक्चर, ई-पुस्तकें और इंटरैक्टिव सामग्रियाँ अपनी सुविधा के अनुसार पढ़ सकते हैं। इससे सांस्कृतिक शिक्षा के प्रसार में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

विरासत संरक्षण में डिजिटल तकनीक का योगदान

भारतीय स्मारकों, मूर्तियों, प्राचीन लेखों और कलाकृतियों का डिजिटल रिकॉर्ड करने का कार्य तेज़ी से बढ़ा है। पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा स्मारकों का 3डी मॉडल बनाना, पांडुलिपियों का स्कैनिंग और गूगल आर्ट्स एण्ड कल्चर के माध्यम से संग्रहालयों के वर्चुअल टूर ऐसे प्रयास हैं, जो सांस्कृतिक ज्ञान को लंबे समय तक सुरक्षित रख सकते हैं[5]।

सोशल मीडिया: सांस्कृतिक संवाद का नया मंच

डिजिटल उपकरणों द्वारा सुलभ सोशल मीडिया आज सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का सबसे सक्रिय स्थान है। यहाँ पर हमें न केवल भारतीय संस्कृति अपितु यूनानी व रोमन संस्कृतियों से संबंधित ज्ञान प्राप्त होते हैं। यह एक ऐसा मंच है जहां पर प्राच्य और प्रतिथि दोनों संस्कृतियों के विपुल ज्ञान लिपि, चित्र एवं चलचित्र ज्ञान के रूप मे दिखलाई पड़ते हैं। इस मंच पर सभी संस्कृतियों के ज्ञान उपलब्ध होने के कारण विशुद्ध संस्कृति, संकर संस्कृति की ओर पलायन कर रही है। यह कोई नई बात नहीं है जब ज्ञान का विस्तार होता है तो संस्कृतियाँ आपस में मिल जाती हैं। जैसे एक कहावत सुनी जाती है की हिन्दु की रसोइयाँ मुग़लिया व्यंजन, और इसाइयत का प्रस्तुतीकरण बहुत बेहतर है, अर्थात खान पान के तरीकों में ही तीन तीन संस्कृतियाँ संवाद करती हुई दिखलाई पड़ रहीं हैं। आज के सांस्कृतिक संवाद को सोशल मीडिया ने बहुत ही सरल और सुगम बना दिया है। यहाँ लोककला को वैश्विक दर्शक, नई पीढ़ी के रुझान, सांस्कृतिक पहचान और विविधता पर चर्चाएँ,

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, January 2024

त्योहारों, परंपराओं और सामाजिक स्मृतियों की साझेदारी लगातार होती रहती है। युवा संस्कृति का बड़ा हिस्सा सोशल मीडिया आधारित है[6]।

प्रमुख सरकारी पहलें एवं कार्यक्रम

भारत सरकार ने डिजिटल इंडिया मिशन: 1 जुलाई 2015 को शुरू किया जिसका उद्देश्य था डिजिटली सशक्त समाज और ज्ञान अर्थव्यवस्था को बनाना।[9] राष्ट्रीय स्मारक एवं पुरावशेष मिशन की दस्तावेजीकरण- और डिजिटलकरण के तहत केंद्र सरकार ने पुरातात्विक एवं स्थापत्य धरोहरों को डिजिटाइज़ कर रही है।[10] विभिन्न भारतीय भाषाओं में सामग्री उपलब्ध कराने के लिए, भाषा-प्रचार और बहुभाषी डिजिटल संचार के लिए 'भाशीनी' नामक राष्ट्रीय भाषा अनुवाद मिशन भी शुरू किया गया है।[11] वेद, उपनिषद्, अन्य पारम्परिक ज्ञान स्रोतों को ऑडियो-वीडियो तथा डिजिटल फॉर्म में संग्रहित और प्रचारित करने के लिए डिजिटल सांस्कृतिक सामग्री प्लेटफॉर्म जैसे कि वैदिक विरासत पोर्टल भी भारत सेकर द्वारा शुरू किया गया है।[12] उत्तर प्रदेश सरकार ने बक्शी का तालाब (लखनऊ) के नजदीक एक डिजिटल म्यूज़ियम बनाने की योजना घोषित की है। इसमें राज्य की लोक-संस्कृति, नृत्य, संगीत, चित्रकला आदि को डिजिटल डिस्प्ले, ए आर, वी आर टूल्स के माध्यम से प्रस्तुत किया जाएगा। यह म्यूज़ियम लगभग 2.5 हेक्टेयर में विकसित होगा, जिसमें कलाकारों के लिए आवास, लाइव प्रदर्शन मंच, डिजिटल अनुभव क्षेत्र शामिल होंगे।[13]

डिजिटल संस्कृति की चुनौतियाँ

आर्थिक डेटा एवं विश्लेषण केंद्र, अशोका विश्वविद्यालय के एक राष्ट्र, अनेक विच्छेद: भारत के घरेलू इंटरनेट अंतराल का मानचित्रण सर्वेक्षण के अनुसार, ग्रामीण भारत में लगभग 83.3 % घरों में इंटरनेट की पहुँच है, जबकि शहरी घरों में यह आंकड़ा 91.6 % है। उसी सर्वेक्षण में यह पाया गया कि ग्रामीण घरों में केवल 3.8 % के पास ऑप्टिकल-फाइबर-कनेक्शन द्वारा इंटरनेट था, जबकि शहरी घरों में यह 15.3 % था। ऑक्सफैम इंडिया रिपोर्ट 2022 की डिजिटल डिवाइड इंडिया: असमानता रिपोर्ट 2022 में उल्लेख है कि भारत में पुरुषों और महिलाओं में इंटरनेट उपयोग में लगभग 40.4 % का अंतर है।इसी रिपोर्ट में यह भी बाते गया कि गरीब-घरानों (सबसे गरीब 20 %) में कंप्यूटर का स्वामित्व मात्र 2.7 % था और इंटरनेट पहुँच मात्र 8.9 % थी, जबकि सबसे धनी 20 % घरानों में क्रमशः 27.6 % और 50.5 % थीं। Inc42.com के शोध लेख शीर्षक: भारत में शहरी-ग्रामीण डिजिटल विभाजन को पाटना में ग्रामीण-शहरी तुलना में, इस बात का संकेत मिलता है कि

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, January 2024

मोबाइल इंटरनेट लगभग घर-घर में मौजूद है, लेकिन उच्च-गति इंटरनेट और फिक्स्ड ब्रॉडबैंड ग्रामीण इलाकों में बहुत कम है। ग्रामीण घरों में इंटरनेट पहुँच केवल 24 % थी जबकि शहरों में यह 66 % थी।[14]

डिजिटल टूल्स एवं तकनीक का समान रूप से समाज में उपलब्धता आज तक नहीं पहुँच पाई है। आज भी इस सच्चाई को स्वीकार करना होगा की ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट की पहुँच बहुत ही कमजोर है, जिसके कारण संस्कृतियों के विविध पक्षों को उजागर करने की चाहत रखने वाले उजागर नहीं कर प रहे हैं, जबकि सहरी क्षेत्रों में इंटरनेट पहुँच इतनी मजबूत है, कि कोई भी विषय वस्तु क्षण मात्र में साँझ की जा सकती है। सभी लोगों के पास उपकरण या उच्च गुणवत्ता इंटरनेट नहीं है। डिजिटल साक्षरता का स्तर भिन्न है, जिससे कुछ लोगों तक सामग्री नहीं पहुँच पाती। ऐल्गारिदम भी सांस्कृतिक समृद्धि मे चुनौती बन कर के उपस्थित हुआ है। इसके अंतर्गत उपभोगता जिस विषय वस्तु को एक बार देखता है उससे संबंधित विषयवस्तु यूट्यूब बार बार प्रस्तुत करता है। जिससे सांस्कृतिक संवाद के लिए भी कठिनाई पैदा होती है। इस पूरी समस्या के पीछे ऐल्गारिदम उत्तरदायी है।

भविष्य की संभावनाएँ

ए आई, वी आर, ए आर और मेटावर्स भारतीय संस्कृति सम्मुख दृष्टि के रूप में प्रस्तुत करेंगे। डिजिटल प्रदर्शनियाँ, इंटरैक्टिव संग्रहालय, स्मार्ट कक्षाएँ और ऑनलाइन सांस्कृतिक उत्सव संस्कृति सीखने और समझने के नए अवसर प्रदान करेंगे। भविष्य में डिजिटल उपकरण भारतीय संस्कृति को वैश्विक स्तर पर और अधिक पहचान दिलाएँगे।

निष्कर्ष

डिजिटल उपकरण आज भारत की सांस्कृतिक प्रगति के प्रमुख वाहक बन गए हैं। उन्होंने संस्कृति को नई पीढ़ी तक पहुँचाया, भाषाओं को सुरक्षित किया, कला को नए दर्शक दिए और हाशियाकृत समुदायों को पहचान दिलाई। यद्यपि डिजिटल विभाजन और वाणिज्यीकरण जैसी चुनौतियाँ मौजूद हैं, फिर भी डिजिटल माध्यमों ने संस्कृति को अधिक सुलभ, जीवंत और वैश्विक बनाया है। डिजिटल उपकरण अब भारतीय संस्कृति की निरंतरता और नवाचार—दोनों के लिए आवश्यक हैं। वे भारत की सांस्कृतिक परंपरा को नए युग से जोड़ते हैं और भविष्य की सांस्कृतिक दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, January 2024

संदर्भ

1. भारत सरकार. नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ इंडिया: कॉन्सेप्ट एंड डेवलपमेंट. शिक्षा मंत्रालय, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान खड़गपुर, 2019.
2. पायल अरोड़ा. द नेक्स्ट बिलियन यूज़र्स: डिजिटल लाइफ बियॉन्ड द वेस्ट. कैम्ब्रिज, मैसाचुसेट्स: हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2019.
3. डेविड क्रिस्टल. लैंग्वेज डेथ. कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2000.
4. भारत सरकार. स्वयं (स्टडी वेब्स ऑफ एक्टिव लर्निंग फॉर यंग एस्पायरिंग माइंड्स). शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, 2020.
5. अशोक कुमार. कल्चरल हेरिटेज मैनेजमेंट इन इंडिया. नई दिल्ली: अगम कला प्रकाशन, 2015.
6. हेनरी जेनकिंस. कन्वर्जेन्स कल्चर: व्हेयर ओल्ड एंड न्यू मीडिया कोलाइड. न्यूयॉर्क: न्यूयॉर्क यूनिवर्सिटी प्रेस, 2006.
7. भारत सरकार. डिजिटल इंडिया प्रोग्राम: ट्रांसफॉर्मिंग इंडिया इन्टू ए डिजिटली एम्पावर्ड सोसाइटी एंड नॉलेज इकॉनमी. इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, 2015.
8. भारत सरकार. नेशनल मिशन ऑन मॉन्यूमेंट्स एंड एंटीक्विटीज़: डॉक्यूमेंटेशन एंड डिजिटाइजेशन ऑफ हेरिटेज. संस्कृति मंत्रालय, 2018.
9. भारत सरकार. भाषिणी: नेशनल लैंग्वेज ट्रांसलेशन मिशन. इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, 2022.
10. भारत सरकार. वैदिक हेरिटेज पोर्टल. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, संस्कृति मंत्रालय, 2020.
11. उत्तर प्रदेश सरकार. डिजिटल म्यूज़ियम प्रोजेक्ट (बक्शी का तालाब, लखनऊ). संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार, 2022.
12. सेंटर फॉर इकोनॉमिक डेटा एंड एनालिसिस (CEDA), अशोका विश्वविद्यालय. वन नेशन, मेनी डिवाइड्स: मैपिंग द हाउसहोल्ड इंटरनेट डिवाइड इन इंडिया. 2021.

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, January 2024

13. ऑक्सफैम इंडिया. इंडिया इनइक्वालिटी रिपोर्ट 2022: डिजिटल डिवाइड. नई दिल्ली: ऑक्सफैम इंडिया, 2022.

14. इन्क42 रिसर्च. ब्रिजिंग द अर्बन–रूरल डिजिटल डिवाइड इन इंडिया. इन्क42 मीडिया, 2021